दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अनुपम जारखड़.

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4 | 27/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	5	5	3	7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

प्रयास अच्छा है।
लेखन-शैली अच्छी है।
अभ्यास करते रहें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 132½   टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) हरिमुख निरखि निमेख बिसारे।
ता दिन तें मनो भए दिगंबर इन नैनन के तारे।।
घूँघटपट छाँड़े बीथिन महँ अहनिसि अटत उघारे।।
सहज समाधि रूपरुचि इकटक टरत न टक तें टारे।।
सूर, सुमति समुझति, जिय जानति, ऊधो! बचन तिहारे।
करै कहा ये कह्यों न मानत लोचन हठी हमारे।।

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में गोपियाँ अपने नयनों के हठ का वर्णन करते हुए कृष्ण प्रेम का चित्रण कर रही हैं।

व्याख्या :- गोपियाँ कहती हैं कि हरिमुख को देखने के बाद नयन उनकी मनमोहक छटा को भूल नहीं पा ~~रहे~~ रहे। उस दिन से गोपीनाथ श्रीकृष्ण ही आँखों के तारे बन गये हैं। उनको देखने के लिए घूँघट छोड़कर अर्थात् सामाजिक लोक-लज्जा त्यागकर बस उनको देखने की ~~इच्छा~~ इच्छा करती है। एकटक उनको देखते रहती हैं। सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव हम आपकी बात समझती हैं तथा हृदय से जानती हैं परंतु इन आँखों के हठ के सामने विवश है।

विशेष:-
1) भक्तिभावना प्रेम के माध्यम से प्रेषित हो रही है। नैनों का प्रयोग वियोग श्रृंगार के वर्णन में हो रहा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) पाँचवीं पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

3) नैनन के तारे मुहावरा शैली का प्रतीक है।

4) ब्रजभाषा के मिठास से शृंगार का वर्णन है।

प्रेम शाश्वत प्रासंगिक विषय है। सूरदास ने गोपियों के माध्यम से इसकी व्यंजना की है जो आज भी प्रासंगिक है तथा व्यावहारिक है।

दीपेन्द्री

5/2/19

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त;
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के राग विराग में संकलित 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में जाम्बवंत राम से शक्ति की मौलिक कल्पना करने का उद्बोधन कर रहे हैं।

व्याख्या:- यहाँ (राम संशय की स्थिति में होते हैं) इस परिस्थिति में जाम्बवंत कहता है कि रावण जैसा दुष्ट यदि शक्ति अर्जित कर सकता है तो मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीराम क्यों नहीं। वह राम से समर रोककर शक्ति की आराधना करने का आह्वान करता है। जब तक सिद्धि न हो तब तक आराधना करने को प्रेरित करता है। सत्य को प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

विशेष:- 1) प्रतीकात्मक शैली में सामयिक विषयों को उठाया गया है। राम स्वयं निराला के तथा राष्ट्रीय संदर्भ में गाँधीजी के प्रतीक हैं।
2) शक्ति की मौलिक कल्पना कविता का मूल विषय है।
3) निराला ने छंद से मुक्ति को कविता की मुक्ति माना है। अतः नवीन छंद शक्ति छंद का प्रयोग किया है।
आज की समस्याओं के संदर्भ में भी तथा जयशंकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद के शब्दों में भी यही भाव प्रकट हुये हैं-
"शक्ति के विद्युतकण व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय
समन्वय करे इनका समस्त
विजयनी मानवता हो जाए"

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) काम-मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल बनाते हो असफल भवधाम।
दु:ख की पिछली रजनी बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात,
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।

संदर्भ व प्रसंग :- यह पंक्तियाँ प्रख्यात चिंतक, इतिहासकार, नाटककार व कवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना कामायनी से ली गई हैं। इन पंक्तियों में श्रद्धा मनु को प्रेरित करती है।

व्याख्या:- काम करना मनुष्य का धर्म है। कर्म से विमुख होना ईश्वर व प्रकृति का अपमान है। इससे यह संसार असफल बनता है। हर रात के बाद सवेरा होता है। दु:ख की अंधेरी रात के बाद भी सुख का नया प्रभात आयेगा। यह पतला परदा अपने पीछे अनेकों सुख छिपाये हुए है।

यह पंक्तियाँ उदासीन मध्यम वर्ग को भी राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित होने का संदेश देती हैं।

6/10

विशेष :- 1) भाषा तत्सम्मी है, सांस्कृतिक गौरव की स्थापना के उद्देश्य से तत्सम शब्दावली प्रयोग की गई है।
2) लय व तुक की प्रधानता भी है।
3) प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग।

प्रस्तुत पंक्तियाँ शाश्वत सत्य का बखान करती हैं जो मनुष्य को निराशा त्यागकर आशावान बनने व कर्मशीलता का संदेश देती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) "धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन, जिसके लिये सदा ही किया शोध!
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।"
वह एक और मन रहा राम का जो न थका;

संदर्भ व प्रसंग:- यह पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की महाकाव्यात्मक व प्रबंधात्मक लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से अवतरित हैं। निराला इन पंक्तियों से व्यक्तिगत जीवन की विफलता व राम की निराशा को व्यक्त करते रहे हैं।

व्याख्या:- राम जब युद्ध में विफल हो रहे थे तथा शक्ति की साधना कर रहे थे तब एक फूल के नहीं मिलने से निराश हो जाते हैं तथा अपने जीवन को धिक्कारते हैं, जिन साधनों के लिए जीवन पर यत्न किया वह हासिल नहीं हुये।
सीता के प्रति अपनी विवशता प्रकट करते हुये कहते हैं कि उसका उद्धार नहीं कर पाया। परंतु राम में जीवतंता व जीजीविषा अभी भी है। राम मन से अभी भी थके नहीं हैं।

6/10

विशेष:-
1) धिक् शब्द की पुनरावृत्ति एक प्रभाव पैदा करती है।
2) यहाँ प्रतीक रूप में निराला अपनी व्यक्तिगत विफलता भी प्रकट कर रहे हैं-
"धन्ये मैं पिता निरर्थक था"
3) छंदमुक्त रचना (शक्ति छंद)
अंतिम पंक्तियाँ आशा का संचार करती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हैं। यह संकेत देती हैं जीवटता व जीवन संघर्ष का।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'कामायनी मानव-मन एवं मानवता के विकास की कहानी है।' इस मत के संदर्भ में कामायनी का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कामायनी एक प्रबंधात्मक महाकाव्य है जिसकी रचना नाटककार, उपन्यासकार, इतिहासकार, चिंतक व कवि जयशंकर प्रसाद ने की है। इसका मूल प्रतिपाद्य मानवता तथा मानव मन का विकास है। यहाँ आनंद दर्शन के माध्यम से समरसता व समन्वय का संदेश निहित है। राष्ट्रीय आंदोलन में नवजागरण की चेतना छायावाद का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मनु भोगवादी व विलासिता की सभ्यता का प्रतीक है। वह सामंती व्यवस्था अवशेष है। उसका चरित्र श्रद्धा की शरण में निखरता है। परंतु सामंती अवशेष होने के कारण पशु-वध करता है। उसने सृजन व विनाश दोनों देखा है। सम्पूर्ण मानव जीवन चक्र का अनुभव किया है। उसकी मानसिक स्थिति इन पंक्तियों से पता चल रही है-

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर
~~एक पुरुष भीगे नयन~~
बैठ शिला की शीतल छाया
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह

श्रद्धा मानवीय मूल्यों व हार्दिक विकास की प्रतीक है। वह मनु को दुःख व अवसाद से निकालकर जीवन जीने की प्रेरणा देती है- "दुःख की पिछली रजनी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बीच विकसिता सुख का नवल प्रभात।" श्रद्धा में ममता, दया के गुण है। वह गाँधीवादी दर्शन पाप से घृणा करो पापी से नहीं की प्रतीक है। वह मनु को क्षमा करती है –

"दया माया ममता लो आज
मधुरिमा का अगाध विश्वास"

इड़ा पश्चिमी मूल्यों की प्रतीक है। वह वैज्ञानिकता, तार्किकता व भौतिक मूल्यों की प्रतीक है। मनु को शांति वापस श्रद्धा के साथ मिलती है। इसलिए मानवता व हार्दिक विकास को बौद्धिकता से श्रेष्ठ बताया गया है। विषमता को दुःखों का कारण माना गया है और उससे विश्व स्पंदित है।

इस प्रकार कामायनी में मानव-मन का विकास होता है। मनु चिंता से आशा, काम वासना, लज्जा से आनंद की ओर प्रवृत्त होता है। मानवता के मूल्यों की स्थापना श्रद्धा के पात्र द्वारा की गई है। मनु को औरों को हँसते देखकर खुश पाने का संदेश श्रद्धा देती है। समस्त मानवता के विजयनी होने की कामना इन पंक्तियों में है –

शक्ति के विद्युतकण व्यस्त
विकल बिखरे हैं हो निरुपाय
समन्वय करें इनका समस्त
विजयनी मानवता हो जाये।

और बेहतर बनाएं

10 1/2 / 20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(ख) अंगीरस की दृष्टि से कामायनी पर विचार कीजिये। 15

कामायनी प्रयोगात्मक प्रबंध काव्य है। यह शिल्प व संवेदना दोनों दृष्टि से अमूल्य निधि है। जयशंकर प्रसाद की भाषा तत्समी व समस्त रसों का आस्वादन इस रचना से होता है। इसलिए अंगीरस एक संश्लिष्ट प्रश्न है।

कामायनी में शृंगार रस श्रद्धा सर्ग में दिखाई देता है। काम, वासना व लज्जा सर्ग में भी शृंगार रस विद्यमान है। परंतु आरंभ चिंता सर्ग से है तथा अंत आनंद सर्ग से। दोनों जगह शृंगार रस नही है। इसलिए इसे अंगीरस नहीं माना जा सकता।

प्रकृति के विना विनाश व प्रारंभिक सर्ग में भयानक रस है। मनु द्वारा पशु वध में वीभत्स रस है। वीर रस भी कहीं कहीं देखने को मिलता है। शिवजी के तांडव में अद्भुत रस है। परंतु यह सारे रस रचना में कुछ जगह विद्यमान हैं अतः इन्हें अंगीरस नहीं कहा जा सकता।

शांत रस पूरी रचना में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। पर यह चिंता सर्ग में भी है। यदि कामायनी का अंत रहस्य सर्ग के साथ होता तो यह अंगीरस होता। परंतु कामायनी का अंत आनंद सर्ग से होता है जहाँ शांतरस नहीं है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आनंद सर्ग में आनंद रस है। रचनाकार भी आनंदवाद से प्रभावित है तथा उनका उद्देश्य भी वही है। आनंद रस को समस्त रसों का संग्रह माना जाता है। इससे रचना का अंत होता है तथा यही समरसता, समन्वय का संदेश भी देता है। अतः आनंद रस ही कामायनी का अंगीरस हो सकता है।

और है

8 1/2 /15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शक्ति-काव्य के प्रतिमान के रूप में 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राम की शक्ति पूजा' में सूर्यकांत निराला ने अपनी सजगता व सृजनशीलता से शक्ति की मौलिक कल्पना करने का संकेत दिया है। यह शक्ति संशय में डूबी हुई जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने को संकेतात्मक रूप में प्रेरित करती है।

राम संशय की स्थिति में हैं। राम को मानव रूप में दिखाया है। वह कहते हैं–

"मित्रवर विजय होगी न समर में"

राम दुःखी हैं क्योंकि अन्याय और शक्ति एक तरफ हैं। मान्यताओं के अनुसार असत्य व दुष्टता के साथ शक्ति नहीं हो सकती। परंतु निराला ने शक्ति का यथार्थवादी चित्रण किया है–

"अन्याय जिधर है उधर शक्ति
कहते छल छल हो गये नयन"

यही शक्ति आज राजनेताओं के पास भी है जिसका उपयोग जनता को लूटने में किया जाता है। शक्ति का प्रयोग वोट बैंक को खरीदने में किया जाता है।

भाषा शैली तत्सम होने तथा पौराणिक कथा का आधार लेने के कारण शक्ति की मौलिक कल्पना अधिक तार्किक लगती है। यह शक्ति काव्य वीर रस व ओज गुण वाला नहीं है। यहाँ मौलिकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शक्ति के प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। सत्य के साथ ही शक्ति चिरस्थायी रह सकती है। जनकल्याणकारी भावना शक्ति के संयोजन के लिए आवश्यक है। यही मौलिक शक्ति की आराधना गाँधीजी को भी करनी थी। इसके दृढ़ता व निरंतरता की आवश्यकता है –

'आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर'

8/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था बाकायदा हमसे कि आप से पढ़े लिखे लोग खाली तमाशबीन ही बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों की लड़ाई कौन लड़ेगा? जहाँ दिन-दहाड़े इतना जुलुम होता हो, वहाँ कोई कैसे अलग-थलग बैठकर खाली कागज पोतता रह सकता है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ महाभोज उपन्यास से हैं। यहाँ मन्नू भण्डारी बिसू की हत्या के माध्यम से राजनीतिक पाखण्ड व जाति व्यवस्था पर प्रहार कर रही हैं।

व्याख्या :- ~~[illegible]~~ बुद्धिजीवी वर्ग तमाशबीन बनकर होने वाले शोषण को देखता रहता है। गरीबों के हितों के लिए लड़ने की कोशिश नहीं करता। इन पंक्तियों में लेखिका बिसू के माध्यम से प्रश्न चिह्न खड़ा करती है समाज की निष्क्रियता व नपुंसकता पर। मानवता व नैतिकता का क्षरण हो चुका है।

विशेष :- 1) भाषा सीधी, सरल व सहज
2) पंक्तियों में आक्रोश है तटस्थता के प्रति। दिनकर जी ने कहा -
"जो तटस्थ हैं समय उनका भी लिखेगा इतिहास"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) कागज पोतना मुहावरा शैली का परिचायक है।

यह पंक्तियाँ आज भी प्रासंगिक हैं क्योंकि समाज में शोषण, जाति व्यवस्था पर आम आदमी चुप है। यह निष्क्रियता समाज के लिए घातक है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रक्खा है, इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनि है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ ज्ञान व शास्त्रावाद का विरोध करती हैं।

व्याख्या:- यहाँ प्रकृति के उदाहरण से जीवन में रस घोलने का संदेश दिया गया है। परमाणु हर जीव का मूल है। हरी पत्ती लयात्मक तरीके से हिलती है। परंतु मनुष्य प्रकृति से सीख नहीं लेता। इसकी वजह से उसकी समस्याएँ बढ़ती है। वह अपने ज्ञान के अहं से विनाश की ओर अग्रसर होता है। वरना प्रकृति में पक्षियों की चहचहाहट कितनी रागमय व लयात्मक है।

विशेष :- 1) यहाँ तत्सम भाषा है।
2) प्रकृति व मनुष्य के सामंजस्य की प्रेरणा है।
3) अनुप्रास अलंकार भी दृष्टव्य है।

2/10

और बेहतर करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

(कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space))

(ग) हा! भारतवर्ष को ऐसी मोह निद्रा ने घेरा है कि अब इस के उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान-बूझकर सोता है उसे कौन जगा सकेगा? हा दैव! तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँका उधार लगवाता है।

(कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space))

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'भारत-दुर्दशा' नाटक के अंतिम अंक से उद्धृत है। इसके रचनाकार रंगकर्मी भारतेन्दु हरिशचन्द्र हैं। यहाँ पराधीन भारत को जागृत करने का प्रयत्न है।

व्याख्या :- भारतेन्दु कहते हैं जो जगाने पर भी आलस्य, निष्क्रियता की चिरनिद्रा में डूबा हुआ है उसे कोई नहीं जगा सकता। भारतवर्ष जो पूर्व में विश्व शिरोमणि व जगद्‌गुरु था आज पराधीन है। यहाँ मुहावरों के माध्यम से भाव को गहरा किया गया है।

विशेष :- 1) भारतेन्दु प्रश्नवाचक शैली का प्रयोग कर रहे हैं।
2) जूते में टाँका उधार लगवाना लोकभाषा का उदाहरण है।
3) यहाँ आज भारत कई तरह की समस्याओं से जूझ रहा है। पर्यावरण परिवर्तन, आतंकवाद, धार्मिक हिंसा जैसी समस्याएँ इन पंक्तियों को प्रासंगिक बनाती है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) ऐसा आतंक आपने कहीं देखा नहीं होगा, साहब! लोगों के घर, ज़मीन और गाय-बैल ही रेहन नहीं रखे हुए हैं जोरावर और सरपंच के यहाँ, उनकी आवाज़ और जबान तक बंधक रखी हुई है। कोई चूँ तक नहीं कर सकता है।

संदर्भ व प्रसंग

यह पंक्तियाँ महाभोज उपन्यास से हैं यहाँ मन्नू भण्डारी जाति व्यवस्था, राजनीति के शोषण का चित्रण कर रही हैं।

व्याख्या:- जोरावर उच्च वर्ग का प्रतिनिधि है। वह लोगों की गाय, जमीन गिरवी रखता है। यहाँ तक की गाँव में होने वाले जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने वालों के खिलाफ भी वह अत्याचार करता है। इस प्रकार सब भयभीत व आतंकित रहते हैं।

यह पंक्तियाँ जाति व्यवस्था के भयावह रूप तथा राजनीति व अपराध के अपवित्र संगम को दिखा रही हैं।

विशेष:-

1) पंक्तियाँ यथार्थवादी हैं तथा पाठक के मन में आक्रोश व भय दोनों पैदा करती हैं।
2) 'चूँ तक नहीं करना' मुहावरा शैली का उदाहरण
3) भाषा सीधी-सपाट तथा वाक्य संरचना सरल।

जातिव्यवस्था कमजोर हुई है परंतु आज भी विद्यमान है। इसका उदाहरण ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जा सकता है। यह पंक्तियाँ हमें दायित्व व संविधान के आदर्शों की याद दिलाती हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) यह तुम नहीं, तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि वह विवेक को ही खा जाए। अख़बारों को तो आज़ाद रहना ही चाहिए। वे ही तो हमारे कामों का, हमारी बातों का असली दर्पण होते हैं। मेरा तो उसूल है कि दर्पण को धुंधला मत होने दो। हाँ, अपनी छवि देखने का साहस होना चाहिए आदमी में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :-
यह पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से हैं। यहाँ दा साहब अखबारों की आजादी का समर्थन कर रहे हैं।

व्याख्या :- स्वार्थ व विवेक के द्वन्द्व पर दा साहब कहते हैं कि विवेक सर्वोपरि। आजाद प्रेस लोकतंत्र का स्तम्भ है। वे ही राजनीति का स्पष्ट विश्लेषण करती हैं। यह एक दर्पण है जिसमें राजनीति अपने को देख सकती है तथा सुधार कर सकती है। इसके साथ ~~राजनीति में~~ पत्रकारिकता को आत्मावलोकन भी करना चाहिए।

विशेष :- 1) भाषा सीधी, सरल, सहज है
2) दर्पण की उपमा पत्रकारिकता को दी गई है
3) यहाँ दा साहब का कृत्रिम चरित्र इतना परिमार्जित लग रहा है कि पाठक धोखा खा सकता है।

पत्रकारिकता की स्वतंत्रता हमेशा से लोकतंत्र के लिए प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।" -दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हो गए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मार्क्सवादी धारा के लेखककार यशपाल ने दिव्या के माध्यम से सामयिक समस्याओं का उद्घाटन किया। यहाँ इतिहास वातावरण है तथा कल्पना प्राथमिक। ऐतिहासिक आवरण पात्रों पर हावी नहीं होता तथा विचारधारा का प्रभाव भी मात्र सूक्ष्म स्तर पर है। यहाँ यथार्थ का रंग जातिवाद, नारी विषमता, मनुष्य की क्रय विक्रय की समस्याओं को उभारने में भरा गया है।

यशपाल की सजगता व सृजनशीलता से इतिहास गौण रहा है तथा कल्पना मुखर हुई है। इतिहास के केवल तीन पात्र हैं - मिलिंद, पुष्यमित्र तथा पातंजलि। इनकी केवल सूचना दी गई है। पात्रों का निर्माण काल्पनिक है। यहाँ बौद्ध धर्म भी इतिहास का हिस्सा है परंतु इस विचारधारा को कल्पना से घटनाओं व स्थितियों द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

घटनाएँ भी काल्पनिक हैं तथा पात्र भी। मारिश का काल्पनिक पात्र नारी चेतना के प्रति यशपाल के दृष्टिकोण को उजागर करता है। वह विवाह संस्था को नकारता है। नारी समस्या के मूल तक जाता है।

पृथुसेन का पात्र जाति व्यवस्था का शिकार बनता है। जन्म के अपराध के कारण अधिकार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से वंचित हो रहता है। रुद्रधीर उच्च वर्ग का प्रतीक है। वह दिव्या को कुलदेवी बनाने का प्रस्ताव देता है। दिव्या इसे केवल भोग करने पराक्रमी पुरुष का सम्मान समझती है।

दिव्या के चरित्र का निर्माण परिस्थितियों से होता है। वह दिव्या से दारा, अंशुमाला बनती है तथा दासव्यवस्था व वेश्यावृत्ति को झेलती है। यह समस्याएँ यथार्थ का रूप हैं। परिस्थितियाँ यहाँ काल्पनिक हैं।

भाषा शैली तत्समी है तथा सूत्र शैली का प्रयोग हुआ है। तत्सम भाषा ऐतिहासिक वातावरण को सघन बनाती है। महाबलाधिकृत, निष्क, धर्मस्थ आदि शब्दों का प्रयोग इसलिए किया गया है।

नारी समस्या के लिए बौद्ध धर्म भी क्रांतिकारी नहीं है क्योंकि वह नारी को त्याज्य मानता है। मनुष्य को केन्द्र में रखकर मारिश कहता है—

"मनुष्य सृष्टि का कर्त्ता है। समस्त माया मनुष्य की क्रीड़ा।"

इस प्रकार लेखक यशपाल ने इतिहास के तथ्यों का न के बराबर प्रयोग किया है। वह वातावरण मात्र है। कथावस्तु, पात्र, घटना योजना काल्पनिक है परंतु समस्याएँ यथार्थवादी हैं। यशपाल ने इसमें अपूर्व सफलता अर्जित की है। इतिहास का प्रयोग दिनकर के कुरुक्षेत्र, राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' में भी हुआ है। परंतु ऐसा यथार्थवादी रंग केवल यशपाल भर पाये हैं।

ठीक है।
11½/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नायकत्व की दृष्टि से 'मैला आँचल' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' फणीश्वरनाथ रेणु का आँचलिक उपन्यास है। इसने आँचलिक उपन्यास को परिभाषा व पहचान दोनों प्रदान की। रेणु के उपन्यास में क्षेत्र विशेष को ईकाई मानकर सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक समस्याओं का संश्लिष्ट चित्रण हुआ है।

आँचलिक उपन्यास में अँचल ही नायक होता है। यहाँ गोदान की तरह होरी जैसा पात्र नहीं है। यहाँ पात्रों की संख्या अधिक है। पात्रों की स्वतंत्र कथाएँ हैं तथा इसके कारण कथानक में बिखराव पैदा होता है।

मैला आँचल का नायक मेरीगंज है। मेरीगंज का क्षेत्र सीतहट स्टेशन से पूरब दिशा में है। यहाँ लोक उत्सव, पर्व, त्यौहार, विवाह आदि के रंग हैं। यहाँ गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास के बीच भी जीवंतता है, लोक मिठास है। विद्यापति के गान इनकी झोपड़ियों में मधुरस बरसाते हैं।

पात्रों की दृष्टि से मुख्य पात्र डॉ. प्रशांत, कमली, लक्ष्मी, तहसीलदार साहब, बालदेव हैं। परंतु कोई भी पात्र पर्याप्त विस्तार नहीं पाता। सबकी अपनी स्वतंत्र कथाएँ हैं। प्रशांत गणेश की नानी, कमली के बीच ही मस्त रहता है। तहसीलदार साहब अपने स्वार्थों की सिद्धि में।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार मैला आँचल में नायकत्व खण्डित है। यहाँ कोई भी पात्र इस ऊँचाई से पे नहीं पहुँचता जहाँ अन्य पात्र गौण हो जाएँ। यह आँचलिक उपन्यास का वैशिष्ट्य है यहाँ अँचल ही नायक है उसकी समस्याएँ ही विभिन्न पात्रों से अभिव्यक्त होती हैं। गणेश की नानी विधवा की समस्या, लक्ष्मी नारी शोषण, संथाल जाति विषमता के प्रतीक हैं।

6½/15

Good

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'मैला आंचल' के नामकरण पर विचार करें। क्या आप इस उपन्यास का इससे बेहतर नाम सुझा सकते हैं? 15

नामकरण रचना के केन्द्र में होना चाहिए। वह रचना की मूल भावना का परिचायक हो तथा संक्षिप्त व प्रतीकात्मक होना चाहिए। 'मैला आंचल' नाम एक चित्र प्रस्तुत करता है जिससे गंदगी अर्थात् समस्याओं का आभास होता है।

'मैला आँचल' आजादी के उपरांत लिखा गया। समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी हुई थी। आजादी के बाद नागार्जुन ने लिखा

"सुजला सुफला के गीत अब हम न गाएँगे
दाल भात तरकारी जब तक पेट भर न खाएँगे।"

यही विचार 'मैला आँचल' शीर्षक में भी है। यह गरीबी, अशिक्षा, धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वास, राजनैतिक ~~भ्रष्टाचार~~ भ्रष्टाचार का द्योतक है।

'मैला आँचल' व्यंजनाधर्मी भी है तथा प्रतीकात्मक भी। यह एक ग्रामीण क्षेत्र का प्रतीक है। वहाँ के समस्याओं का प्रतीक है। रचनाकार का उद्देश्य है आँचलिक समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना। यह आवश्यक था स्वतंत्रता के बाद। गोदान के समय राष्ट्रीय आंदोलन जरूरी था परंतु अब आजादी के बाद विकास की अवश्यकता थी। भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। इसलिए इन समस्याओं का केन्द्र तक पहुँचना आवश्यक था। यह शीर्षक समस्याओं को उद्घाटित करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' शीर्षक संक्षिप्त भी है व बिंबधर्मी भी इससे ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं का बिंब प्रस्तुत होता है।
इसके अलावा दूसरा नामकरण चरित्र प्रधान, घटना प्रधान हो सकता था। परंतु यहाँ चरित्र योजना में बिखराव है तथा उदात्त चरित्र व नायकत्व का अभाव है। घटनाएँ भी बहुत ज्यादा हैं तथा किसी भी घटना को प्रमुख नहीं माना जा सकता। अतः 'मैला आँचल' शीर्षक ही उपयुक्त है।

6½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) आपके मत से हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कौन-सा है और क्यों? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी में आँचलिक उपन्यास की परंपरा 'मैला आँचल' से प्रारंभ होती है। इसके बाद अन्यत्र भी छानबीन की गई। जिसमें नागार्जुन का 'बलचनमा' तथा 'वरुण के बेटे' प्रमुख हैं। रेणु ने भी 'जुलूस' (बंगाली शरणार्थी समस्या पर) उपन्यास लिखा। 'मैला आँचल' ने ही आँचलिक उपन्यास की नींव डाली। इसके पश्चात लिखे गये उपन्यास ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुये। अतः यही हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

'मैला आँचल' लिखते हुए रेणु के सामने भाषायी स्वीकार्यता के, पाठक वर्ग के, विश्वविद्यालय स्तर पर स्वीकार्यता के खतरे थे। आर्थिक खतरे भी थे। इसकी भाषा न तो मानक थी न ही व्याकरण के नियमों के अनुरूप। इसमें भदेश व देशज शब्दों की भरमार थी। परंतु रेणु की सृजनशीलता व कला के कारण प्रसिद्ध भी हुआ तथा प्रासंगिक भी रहा।

आँचलिकता रचनाकार के दृष्टिकोण में भी होती है। मैला आँचल की भूमिका में रेणु ने कहा कि वह एक अँचल के गाँव को इकाई मानकर क्षेत्र विशेष की समस्याओं को प्रदर्शित कर रहे हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचलिक उपन्यास में भाषा शैली भी महत्वपूर्ण होती है। भनसाघर, बुतरु, पुमौना जैसे लोक भाषा के शब्द आँचलिकता को विश्वसनीयता देते हैं। कमली का पात्र नारी मनोविज्ञान दिखाता है। मेरीगंज ही रचना का नायक है।

पात्रों का बिखराव, कथानक में भी बिखराव लगता है परंतु यह बिखराव जीवंतता प्रदान करता है। आँचलिक उपन्यास के अनुरूप पात्रों की संख्या भी अधिक है। चरित्र योजना पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। सबकी स्वतंत्र कथाएँ चलती रहती हैं।

संवेदना के स्तर पर आँचलिकता समस्याओं को स्पष्ट, पारदर्शी व तथ्यपरक तरीके से दिखाने में है। ज्योतिषी काका कहते हैं- 'ये डॉक्टर लोग सुई घोंपकर कमजोर करते हैं तथा बीमारी फैलाते हैं', लक्ष्मी का मठ पर शोषण होता है। गरीबी व अशिक्षा से अभिशप्त लोग राजनीति से भी प्रताड़ित हैं। कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी व विद्रोप जब अपने स्वार्थ साधने में लगे हैं।

इस प्रकार मैला आँचल एक निधि है जिसमें आँचल का सांस्कृतिक पक्ष व सामाजिक समस्याएँ दिखती हैं। शिल्प के स्तर पर भी यह अनूठा प्रयोग है। उसकी अव्यवस्थता ही इसको आँचलिक बनाती है।

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) राजनीति और अपराध के आपसी संबंधों की औपन्यासिक प्रस्तुति के रूप में 'महाभोज' पर विचार कीजिये। 15

'महाभोज' मन्नू भण्डारी का मूल्यबोध उपन्यास है। परिवेश ही व्यक्तित्व का निर्माण करता है अतः उसके प्रति दायित्वबोध का परिणाम महाभोज है।

राजनीति का स्वरूप स्वतंत्रता उपरांत तेजी से बदला। भ्रष्टचार, जाति समूह के रूप में वोट बैंक तथा अवसरवाद इसकी विशेषता बन गये। सुकुल बाबू बीसू की मौत को प्लेट में परोस कर आयी मौका समझते हैं।

सक्सेना सही जाँच करने का दण्ड पाते हैं तथा डी. आई. जी. भ्रष्टाचार से आई. जी. बनते हैं। बीसू की मौत पर निर्दोष बिंदा को जेल भेज दिया जाता है। दोषी जोरावर तथाकथित निम्न वर्ग का शोषण करता है।

राजनेता, कार्यपालिका व पत्रकारिता में आपसी गठजोड़ है। दा साहब का द्वैत चरित्र राजनीति का वास्तविक चेहरा है। दा साहब के लिए मन्नू भण्डारी कहती हैं– "बात को अपने से अपने मन से काटकर भी कहा जा सकता है, ये बात कोई दा साहब से सीखे।"

दत्ता बाबू पत्रकारिता के सिद्धांत त्यागकर दा साहब से मिल जाते हैं। हरिजनों पर अत्याचार होता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दा साहब हरिजनों के वोट से सत्ता हथियाते हैं तथा सुकुल बाबू उससे उन्हें अपदस्थ करने की कोशिश करते हैं। हरिजनों की टोले में आग लगा दी जाती है, आदमियों सहित।

इस प्रकार महाभोज में राजनीति व अपराध में पूरक संबंध दर्शाए गए हैं। यहाँ मध्यवर्ग तथा बुद्धिजीवी वर्ग तटस्थ बना हुआ है। राजनीति के लिए ये पंक्तियाँ सटीक हैं–

"लिया बहुत बहुत ज्यादा दिया बहुत-बहुत कम
खा गए देश को बच गए हम"

परंतु यथास्थिति को बदलने के मुक्तिबोध के अनुसार 'अभिव्यक्ति के सारे खतरे अब उठाने होंगे'

8/20
11
अच्छा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के नारी-चिन्तन पर प्रकाश डालिये। 15

दिव्या उपन्यास की मूल समस्या नारी चिन्तन ही है। इसके लिए पुरुष समाज को दोषी माना गया है धर्म, वर्ण व्यवस्था तथा सामाजिक रीति-रीवाज नारी के शोषण का कारण बनते हैं। यह असमानता जैविक कारणों से नहीं है।

यशपाल मारिश के चरित्र से अपनी नारी चेतना को दिखाते हैं दिव्या दासी, वेश्या बनने को मजबूर होती है। वह परिस्थितियों से निर्मित होती है रुद्रधीर दिव्या को कुलदेवी का सम्मान देना चाहता है। इसे दिव्या स्त्री का अपमान समझती है। यह दिखावटी सम्मान शोषण का कारण बनता है। यहाँ दिखाया गया है कि कैसे वर्ण व्यवस्था लिंगभेद को जन्म देती है।

दिव्या जब वेश्यावृत्ति का वरण करती है- स्वतंत्रता के लिए। तब मारिश कहता है- "वेश्या की स्वतंत्रता का भोग जन करता है। उसे केवल वेचना मिलती है।"

यशपाल उग्र नारीवाद के समर्थक भी नहीं है जब स्त्री पुरुष से लड़-लड़कर उसके समान ही हो जाती है। यह उन्होंने 'सीरो' के पात्र से दिखाया है जो पश्चिमी आधुनिकता का प्रतीक है। यशपाल इसे नकारते हैं।

प्रेस्थ नारी को साधन, उपकरण मात्र समझते हैं। यह विचार ~~पुरुष~~ पितृ सत्तात्मक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मानसिकता का परिचायक है।

समग्रतः दिव्या बौद्ध धर्म के निर्वाण का, विवाह का त्याग कर सहज स्वत्व का चुनाव करती है। नारी-पुरुष का संबंध प्रणय का आदान-प्रदान है। नारी पुरुष के लिए साधन नहीं हो सकती। इस प्रकार यशपाल नारी स्वतंत्रता के पक्षधर हैं तथा स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर हर तरह की विषमता मिटाने की कल्पना करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation